# प्रार्थना समाज

संस्थापक : --- डॉ. आत्माराम पांडुरंग
स्थापना : --- 31 मार्च 1867
स्थल : --- मुंबई

भारतीय नवजागरण आंदोलन में ब्रह्मो समाज आर्य समाज रामकृष्ण मिशन सत्यशोधक समाज थियोसॉफिकल सोसायटी जैसी अनेक सामाजिक संस्थाएं अपना योगदान दे रही थी। इसमें ही मुंबई में स्थापित एक महत्वपूर्ण संस्था है प्रार्थना समाज। इसकी स्थापना आत्माराम पांडुरंग ने **31** मार्च **1867** को भारत में धार्मिक और सामाजिक सुधारों के उद्देश्य से की। प्रार्थना समाज का अर्थ है "ईश्वर की सच्ची की प्रार्थना के लिए स्थापित किया गया समुदाय।" इस संस्था के अध्यक्ष महादेव गोविंद रानडे 1869 में बने थे। उन्होंने अपने अथक प्रयासों द्वारा भारतीय सुधारों को एक नई दिशा प्रदान की। इसलिए प्रार्थना समाज के सफलता का श्रेय न्यायमूर्ति रानडे को ही दिया जाता है। प्रार्थना समाज की पृष्ठभूमि अंग्रेजी शिक्षा का प्रवेश और ईसाई मिशनरियों के कार्य इन दो घटनाओं से बनी। अंग्रेजी शिक्षा के प्रसार से शिक्षित भारतीयों में अपने सामाजिक और धार्मिक विश्वासों तथा रीति-रिवाजों के दोषों और त्रुटियों के प्रति चेतना जागृत हुई। साथ ही ईसाई मिशनरियों ने अनेक लोगों को विशेषता हिंदुओं का धर्म परिवर्तन कर उन्हें ईसाई बना दिया। 1854 तक 150000 महाराष्ट्र के लोगों ने ईसाई धर्म का स्वीकार किया था। जिससे समाज सुधारकों की आंखें खुली। हिंदू दर्शन को माननेवाले समाज सुधारकों ने सांस्कृतिक मूल्य के आधार पर हिंदू समाज के बौद्धिक और आध्यात्मिक पुनरुत्थान का श्रीगणेश किया। हिंदू विचारधारा के इन्हीं नेताओं में से डॉ. आत्माराम पांडुरंग दादोबा पांडुरंग ने प्रार्थना समाज की स्थापना के की। प्रार्थना समाज ने राजा राम मोहन राय द्वारा स्थापित ब्रह्म समाज से प्रेरणा ली और धार्मिक सामाजिक जीवन के स्वस्थ सुधार के लिए अपनी सारी शक्ति अर्पित की। धीरे-धीरे प्रार्थना समाज का विस्तार पुणे, अहमदाबाद, सातारा, अहमदनगर आदि स्थानों में भी हुआ।

## प्रार्थना समाज की विचारधारा और कार्य : --

### ईश्वर के प्रति विचार : --

1) ईश्वर इस ब्रह्मांड का रचयिता है।
2) ईश्वर की आराधना से ही संसार में सुख प्राप्त हो सकता है।
3) ईश्वर के प्रति प्रेम, श्रद्धा, अनन्य आस्था से उसकी प्रार्थना करना। ईश्वर को अच्छे लगने वाले कार्यों को करना यही ईश्वर की सच्ची आराधना है।
4) मूर्तियों अथवा अन्य मानव सृजीत वस्तुओं की पूजा करना ईश्वर की आराधना का सच्चा मार्ग नहीं है।
5) ईश्वर अवतार नहीं लेता और कोई भी एक पुस्तक ऐसी नहीं है जिसे स्वयं ईश्वर ने रचा अथवा प्रकाशित किया हो अथवा जो पूर्णतया दोष रहित हो।

**जातिभेद का विरोध : --** समाज मे व्याप्त स्पृश्य अस्पृश्य भेद सामाजिक ह्रास का कारण था। इसलिए प्रार्थना समाज ने जातिभेद निर्मूलन पर जोर दिया। उन्हें मानवीय अधिकार प्रदान करने की कोशिश की। प्रार्थना समाज के कार्यकर्ता विट्ठल रामजी शिंदे द्वारा 'डिप्रेस्ड क्लास मिशन" नामक संस्था अछूतोद्धार के लिए स्थापित हुई। अस्पृश्यता निवारण करने के लिए तथा देश सेवा के लिए अच्छे कार्यकर्ताओं की निर्मिति

के लिए नामदार गोपाल कृष्ण गोखले जी ने 'सर्व्हंट्स ऑफ इंडिया सोसाइटी' की स्थापना की। अस्पृश्यता निवारण करने के लिए इस संस्था ने महत्वपूर्ण योगदान दिया। सन 1890 को मुंबई के मदनपुरा में अस्पृश्यों के लिए विद्यालय खोला गया।

नारी जागरण : -- भारत में महिलाओं की स्थिति चिंताजनक बनी हुई थी। वह हीन, असमर्थ, दिन, दुर्बल, पराधीन दुर्भाग्य की मारी थी। नारी की ऐसी दशा के रहते कोई बड़ा सुधार या परिवर्तन कैसे हो सकता है? स्थिति को बदलने के लिए न्यायमूर्ति गोविंद रानडे और उनके प्रार्थना समाज ने स्त्रियों की गुलामी, बाल विवाह, विधवा विवाह का निषेध, स्त्रियों में अशिक्षा, उपेक्षा आदि का विरोध किया। इनके कार्य में महर्षि धोंडो केशव कर्वे ने भी सहयोग दिया। कर्वे के सहयोग से रानडे ने 1867 में विधवा आश्रम संघ की स्थापना की। 19वीं शताब्दी के 9 वें दशक में नारी जागरण की योजनाओं का प्रारंभ हुआ। उन्होंने 1882 में आर्य महिला समाज की स्थापना की।स्त्री शिक्षा के उद्देश्य से पूना में प्रार्थना समाज ने 1888 में महिलाओं के लिए स्कूल शुरू किया।

अनिष्ठ रूढि परंपराओं का विरोध : -- भारतीय समाज में व्याप्त अनिष्ट, निरर्थक, अमानवीय परंपराओं का प्रार्थना समाज ने विरोध किया। समस्त समाज खोखले धर्म के शिकंजे में फंसा हुआ था सामान्य जनता इस धार्मिक चक्रव्यूह से बाहर नहीं निकल पा रही थी अतः समस्त समाज अधोगति की ओर जा रहा था। प्रार्थना समाज ने भारतीय जनता की मानसिकता में परिवर्तन लाने का प्रयास किया।

साम्यवादी विचारधारा : -- प्रार्थना समाज का उद्देश्य समाज परिवर्तन के साथ साथ समाज में समता और एकता प्रस्थापित करना भी रहा है। समता परक समाज का निर्माण प्रार्थना समाज का ध्येय था। उन्होंने जातिभेद, वर्ण भेद को मिटा कर वर्गविहीन नूतन समाज की रचना की।

जन शिक्षा और प्रौढ़ शिक्षा का प्रसार : -- सोए हुए भारतीय समाज को जागृत करने का, उन्हे बेहतर जीवन देने का एक ही मध्यम था 'शिक्षा।' शिक्षा मनुष्य को सकारात्मक सोच देती है। विपरीत परिस्थिति में जूझने की हिम्मत प्रदान करती हैं। इसलिए प्रार्थना समाज ने शिक्षा के क्षेत्र में अहम कदम उठाएं। भारत में शिक्षा के प्रसार के लिए उन्होंने 1874 में डेक्कन एजुकेशन सोसाइटी की स्थापना की। इस सोसाइटी को कालांतर में फर्ग्युसन कॉलेज का नाम दिया गया। डेक्कन एजुकेशन सोसाइटी के सदस्यों में लोकमान्य तिलक, गोखले, आगरकर आदि शामिल थे।

प्रार्थना समाज ने भिकोबा लक्ष्मण चव्हाण के सहयोग से 1876 में पहला रात्रि विद्यालय जन शिक्षा और प्रौढ़ शिक्षा के लिए मुंबई में खोल दिया। 1917 में प्रार्थना समाज ने राम मोहन अंग्रेजी विद्यालय की स्थापना की। अब इसके संरक्षण से 10 से अधिक विद्यालय मुंबई और आसपास चल रहे हैं।

बालकाश्रम की स्थापना : -- वासुदेव बाबाजी नौरंगी ने बालकाश्रम की स्थापना उमा शंकर के सहयोग से 1875 में की। यह बालकाश्रम आगे चलकर प्रार्थना समाज के साथ जुड़ गया। यह संस्था सर्वाधिक प्राचीन और बड़ी संस्था है। 1975 में इस संस्था को सौ साल पूर्ण हुए। प्रार्थना समाज के संरक्षण में और दो बालक आश्रम चलते हैं एक विले पार्ले मुंबई में डी. एन. सिरुर होम और दूसरा सातारा जिले के वाई में स्थित है।

निष्कर्ष : -- उपर्युक्त विवेचन के बाद हम कह सकते हैं कि प्रार्थना समाज ने सामाजिक और धार्मिक जन जागृति का कार्य किया। सामाजिक क्षेत्र में प्रार्थना समाज ने के उद्देश्य थे विधवा विवाह का प्रचार करना, जाति प्रथा को अस्वीकार करना, स्त्री शिक्षा को प्रोत्साहन देना, बाल विवाह का बहिष्कार करना, विवेकपूर्ण उपासना करना और अन्य सामाजिक सुधार कार्य करना ।प्रार्थना समाज के विचारों को प्रसारित करने के लिए रानडे ने 'एकेश्वर निष्ठांची कैफियत' ग्रंथ लिखा। इस ग्रंथ में लोगों के मन में उठने वाले आशंकाओं को दूर करने का प्रयास किया था।

By Dr.Sangita Chitrakoti